

# बदलते परिदृश्य में भारत का मार्गदर्शन: वैश्विक उर्वरक बाजार पर अमेरिकी टैरिफ का प्रभाव

अभिषेक वाडेकर

संस्थापक अध्यक्ष, ट्रेडलिंग इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड

वैश्विक उर्वरक क्षेत्र अभूतपूर्व उथल-पुथल का सामना कर रहा है क्योंकि हाल ही में अमेरिकी व्यापार नीति में किए गए संशोधनों ने अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति नेटवर्क को मौलिक रूप से नया रूप दिया है। बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव इन चुनौतियों को और बढ़ा रहे हैं, कृषि बाजारों में व्यापक अनिश्चितता उत्पन्न कर रहे हैं और तनावपूर्ण वितरण चैनलों के माध्यम से दुनिया भर के कृषक समुदायों को प्रभावित कर रहे हैं। जो आपूर्ति श्रृंखलाएँ पहले पूर्वानुमानित हुआ करती थीं, अब वे अनिश्चित हैं। अमेरिकी टैरिफ का नवीनतम प्रवृत्ति विशेष रूप से चिंताजनक है क्योंकि यह लंबे समय से स्थापित व्यापारिक संबंधों को बाधित और सभी को नई व्यवस्थाओं के लिए संघर्ष करने पर विवश कर रहा है। भारत जैसे देश के लिए, जिसकी व्यापक कृषि अर्थव्यवस्था एक सीमा तक उर्वरक आयात पर निर्भर करती है, ये घटनाक्रम महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं।

यह लेख इन अमेरिकी नीतियों की सूक्ष्मता, अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक व्यापार पर उनके तात्कालिक और दीर्घकालिक प्रभावों, और सबसे महत्वपूर्ण, भारत पर उनके प्रभावों पर गहराई से चर्चा करता है।

**नए अमेरिकी टैरिफ उर्वरक बाजारों को कैसे प्रभावित कर रहे हैं**

31 जुलाई को, राष्ट्रपति ट्रम्प ने एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए, जिसका वैश्विक



उर्वरक बाजारों पर पहले से ही व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। नए 'पारस्परिक' टैरिफ 7 अगस्त से लागू हो गए हैं, और ये कुछ देशों पर दूसरों की तुलना में कहीं अधिक भारी पड़ रहे हैं।

मिस्र, सऊदी अरब और मोरक्को अब अपने फॉस्फेट उर्वरकों पर 10 प्रतिशत टैरिफ का सामना कर रहे हैं, जबकि जॉर्डन और इजराइल पर 15 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया है। यह एक बड़ी बात है, खासकर सऊदी अरब के लिए, जो अमेरिका को अमोनियम फॉस्फेट का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। नाइट्रोजन की दुनिया में,

अल्जीरिया और नाइजीरिया के दानेदार यूरिया पर अब क्रमशः 30 प्रतिशत और 15 प्रतिशत टैरिफ लग रहे हैं। परन्तु, सभी पर इसका प्रभाव समान रूप से नहीं पड़ा है।

टैरिफ के कार्यान्वयन से आवेदन में उल्लेखनीय विसंगतियाँ सामने आती हैं। कनाडा जैसे यूएसएमसीए देशों के पोटेशियम उर्वरकों को टैरिफ-मुक्त स्थिति प्राप्त है, जबकि अन्य कनाडाई निर्यातों पर 35 प्रतिशत का भारी शुल्क लगता है। ब्राजील ने आरम्भ में प्रस्तावित 50 प्रतिशत टैरिफ से राहत पाने के लिए सफलतापूर्वक बातचीत की, और राजनयिक माध्यमों से एनपीके उत्पादों के लिए छूट प्राप्त की। इन घोषणाओं के प्रत्यक्ष परिणाम स्वरूप, मोनोअमोनियम फॉस्फेट (एमएपी), डायअमोनियम फॉस्फेट (डीएपी), यूरिया और अमोनिया जैसे महत्वपूर्ण उर्वरकों के बाजार मूल्यों में 31 जुलाई को तत्काल वृद्धि देखी गई। यह पूरी स्थिति दर्शाती है कि व्यापारिक सम्बन्ध कितनी जल्दी बदल सकते हैं और सभी को अनुकूलन के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है।

**वैश्विक उर्वरक बाजार कैसे बदल रहे हैं और भारत के लिए इसके क्या अर्थ हैं**

उर्वरक उद्योग में भारी वृद्धि हो रही है। वैश्विक उर्वरक बाजार के 2025 में लगभग 402.5 अरब डॉलर से बढ़कर 2030 तक 541.2 अरब डॉलर हो जाने का अनुमान है, जो सालाना लगभग 6.1 प्रतिशत की वृद्धि है। यह 2050 तक 9 अरब से अधिक होने वाली अनुमानित विश्व जनसंख्या



को खिलाने की आवश्यकता, उपलब्ध कृषि भूमि में कमी और आधुनिक कृषि तकनीकों के बढ़ते उपयोग से प्रेरित है।

भारत के कृषि क्षेत्र, जो इसकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, के लिए यह वैश्विक स्थिति कुछ गंभीर दोष उत्पन्न करती है। भारत अपने विशाल फसल उत्पादन को बनाए रखने के लिए आयातित उर्वरकों पर बहुत अधिक निर्भर करता है। इन आयातों का एक बड़ा भाग रूस और सऊदी अरब से आता है, ये दोनों देश अब प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नए अमेरिकी टैरिफ से प्रभावित हैं। आयात स्रोतों पर इस अत्यधिक निर्भरता के कारण भारत को मूल्य झटकों और आपूर्ति में व्यवधान का एक बड़ा संकट है। हालाँकि ये टैरिफ सीधे भारत को लक्षित नहीं करते हैं, लेकिन इनके व्यापक प्रभाव अपरिहार्य हैं। जब वैश्विक स्तर पर उर्वरक की कीमतें बढ़ेंगी, तो भारत का क्रय व्यय बढ़ेगा, जिससे किसानों पर भारी दबाव पड़ेगा, जिससे अंततः उनके लाभ में कमी की सम्भावना है, उपभोक्ताओं के लिए खाद्यान्न की लागत बढ़ेगी और संभवतः भारतीय कृषि निर्यात दुनिया भर में कम प्रतिस्पर्धी हो जाएगा।

#### भारत की रणनीतिक चुनौतियाँ और अवसर-आगे की राह

यह स्थिति भारत के सामने कई विशिष्ट चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है और यदि इनका सही ढंग से समाधान किया जाए, तो यह देश को बहुमूल्य अवसर प्रदान कर सकती है। टैरिफ की तात्कालिक कठिनाइयों स्पष्ट हैं - आपूर्तिकर्ताओं पर अत्यधिक निर्भरता, जो अब नए व्यापार

अवरोधों का सामना कर रहे हैं, अंतर्राष्ट्रीय मूल्य में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशीलता, और अपर्याप्त घरेलू उत्पादन क्षमताएँ। भारत के आयात आँकड़े इस निर्भरता को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं - लगभग 20 प्रतिशत यूरिया, 50-60 प्रतिशत डीएपी, और लगभग सभी म्यूरेट ऑफ पोटाश की आवश्यकताएँ विदेशों से आती हैं।

यद्यपि कि, ये परिस्थितियाँ नीतियों के व्यापक पुनर्गठन के अवसर भी प्रस्तुत करती हैं। भारत दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में आपूर्ति साझेदारियाँ स्थापित करके, संकेंद्रित स्रोतों पर निर्भरता कम करके और भू-राजनीतिक व्यवधानों के विरुद्ध लचीलापन बनाकर आयात विविधीकरण को आगे बढ़ा सकता है। वर्तमान परिस्थितियाँ घरेलू उत्पादन विकास में तेजी लाने के पक्ष में हैं। रणनीतिक अनुसंधान निवेश, निजी क्षेत्र के प्रोत्साहन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आत्मनिर्भरता के लक्ष्यों को महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ा सकते हैं। भारत के राजनयिक माध्यम अनुकूल व्यापार व्यवस्थाओं पर बातचीत कर सकते हैं और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों के माध्यम से छूट प्राप्त कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, सटीक खेती और पोषक तत्वों से भरपूर उर्वरक अनुप्रयोगों के माध्यम से टिकाऊ कृषि पद्धतियों को आगे बढ़ाने से उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है और साथ ही समग्र खपत में कमी आ सकती है, जिससे दीर्घकालिक आयात निर्भरता कम हो सकती है।

सक्रिय बाजार निरीक्षण रणनीतिक क्रय समय को सक्षम बना सकती है, जिससे संभावित रूप से अधिशेष उर्वरक का लाभ उठाया जा सकता है क्योंकि आपूर्तिकर्ता संयुक्त राज्य अमेरिका से उर्वरक की मात्रा को पुनर्निर्देशित करते हैं। ये समन्वित दृष्टिकोण वर्तमान दोषों को स्थायी प्रतिस्पर्धात्मक लाभों में बदल सकते हैं, भारत के कृषि आधार को सुदृढ़ कर सकते हैं और साथ ही उन वाह्य निर्भरताओं को कम कर सकते हैं जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से इस क्षेत्र की विकास क्षमता को बाधित किया है।

#### निष्कर्ष

अमेरिकी टैरिफ कदम अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। भारत के लिए, यह विविधीकरण, आत्मनिर्भरता और चतुर कूटनीति के माध्यम से लचीलेपन को मजबूत करने की आवश्यकता पर भी बल देता है। दूरदर्शी और त्वरित कार्रवाई करके, भारत स्वयं को संकटों से बचा सकता है, इनपुट मूल्यों को स्थिर कर सकता है, और एक पुनर्संयोजित विश्व अर्थव्यवस्था में उभरते व्यापार संरक्षण से लाभ उठाने के लिए स्वयं को तत्पर कर सकता है।

